L-57 Political Science राजनीति विज्ञान Dr. Avinash Kumar

शक्ति को प्रयोग में लाने की पद्धतियां एवं सीमाएं (Techniques for Use of Power) — दो राष्ट्र या व्यक्ति हैं 'क' और 'ख'। उनके बीच एक समस्या है। हम यह भी कल्पना करें कि 'क' कुछ करना चाहता है और 'ख' इससे भिन्न कुछ करना चाहता है। किसी भी वास्तविक परिस्थिति में 'क', 'ख' को प्रभावित करने का प्रयास करेगा। प्रश्न है कि दोनों राष्ट्रों या व्यक्तियों को एक-दूसरे के आचरण को प्रभावित करने के लिए क्या करना चाहिए? सामान्यतः इनके पास चार विकल्प हैं - वे एक-दूसरे को समझा-बुझा सकते हैं, वे एक-दूसरे को प्रलोभन दे सकते हैं, वे धमकी को भी प्रयोग में ला सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर वे बल प्रयोग भी कर सकते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि शक्ति के प्रयोग में लाने के चार तरीके हैं। - समझाना, प्रलोभन, दण्ड और शक्ति।

(i) समझाना - शक्ति के प्रयोग में लाने का सबसे सुगम तरीका समझाने का ही है। अगर 'क' के समझाने-बुझाने पर 'ख' मान लेता है तो उसका परिणाम स्थायी होता है। इस पद्धति को प्रयोग में लाने के लिए 'क' को केवल एक काम करना है और वह यह है कि वह सम्पूर्ण परिस्थिति को इस प्रकार परिभाषित करे जिससे 'ख' इस सम्बन्ध में अपना विचार बदल दे कि उसे क्या करना चाहिए।

(ii) प्रलोभन - 'क' के पास 'ख' के आचरण को अपने अनुकूल बनाने की जो दूसरी पद्धति उपलब्ध है वह प्रलोभन की है। ये प्रलोभन चार प्रकार के हो सकते हैं। - मनोवैज्ञानिक, भौतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक।

(iii) दण्ड - शक्ति को प्रयोग में लाने का तरीका दण्ड की धमकी है। यदि 'ख' समझाने और प्रलोभन के बावजूद वह काम करता है जिसे 'क' अवांछनीय समझता है तो 'क' उस स्थिति में 'ख' को दण्ड की धमकी दे सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में दण्डात्मक कार्यों की क्रियान्विति आए दिन होती रहती है। परन्तु दण्ड को प्रभावशाली बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसको केवल

धमकी दी जाए, उसे प्रयोग में न लाया जाए।

(iv) बल - शक्ति को प्रयोग में लाने का अन्तिम तरीका बल है। दण्ड और बल-प्रयोग में भेद करने की आवश्यकता है। दण्ड की निरोध के रूप में धमकी दी जाती है यह बल प्रयोग में परिवर्तित हो जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बल-प्रयोग का सबसे अधिक उग्र रूप युद्ध है, वस्तुतः यह बल प्रयोग का अन्तिम चरण है। इसका प्रयोग केवल उस समय होता है जब सम्बद्ध राष्ट्र को समझाने से अथवा घूस से अथवा धमकी से अपने आचरण को बदलने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता।

अंत में, शक्ति प्रयोग स्वच्छन्द नहीं होता और इसके ऊपर अनेक प्रतिबन्ध तथा सीमाएं, आदि होती हैं। ये सीमाएं अनेक बातों से सम्बन्ध रखती हैं, जैसे इतिहास और परम्पराएं, सहमति या स्वीकृति प्राप्त करने की आवश्यकता के तरीके, राजनीतिक विकास का प्रभाव, धर्म, नैतिकता एवं समूहों का दबाव, आदि। शक्ति की सीमाएं प्रयोगकर्ता के लक्ष्य एवं उद्देश्यों, उसकी क्षमता, पारस्परिक सम्बन्धों, प्रतियोगिता, कार्य-पद्धतियों और वातावरण सम्बन्धी कारणों, आदि से भी उत्पन्न होती हैं।

Scanned with CamScanner